

* Adam Smith - Father of Economics

* अर्थशास्त्र → यह एक सामाजिक विज्ञान का विषय है जिसमें हम समाज में हो रहे आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करते हैं। यह आर्थिक क्रियाएँ मानव द्वारा मानव के ~~द्वारा~~ संगठन के द्वारा किए जाते हैं।

नोट → आर्थिक क्रियाओं का अर्थ ऐसे क्रियाएँ हैं जिससे हमें मौतिक अथवा गौतमीतिक मूलयों का निर्माण करते हैं।

नोट → सामाजिक विज्ञान अध्ययन करने का एक अलग वेत्र है जिसमें हम समाज में हो रहे क्रियाकलापों का अध्ययन करते हैं।

जैसे → अर्थशास्त्र - आर्थिक क्रिया

भूगोल - मौगोलिक क्रिया

राजनीति शास्त्र - राजनीतिक क्रिया

मनोविज्ञान - मनोविज्ञानिक क्रिया

इतिहास - स्थितिहासिक क्रिया

Q

अर्थशास्त्र क्या है? क्योंकि इसको क्या कहते हैं?

Ans → मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अर्थशास्त्र इन्ही सामाजिक मनुष्यों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रत्येक जीविधारी को कुछ न कुछ आवश्यकताएँ होती हैं। जो उपलब्ध

Page No. 07-08-23

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग व करते हैं परन्तु इन सब में मानव ने अधिक मानसिक प्रगति की है। यह आपनी मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रासीरिक किया रखता है तो मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बौद्धिक कियाओं का सहारा लेता है। इसी प्रकार आद्यात्मिक यथा नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति ईरपर, मनन, हथाह, आत्मचिन्तन तथा अन्य धार्मिक कियाओं द्वारा करता है। मानव इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किस गति प्रयत्न में कई प्रकार के होते हैं। इन प्रयत्नों में आर्थिक प्रयत्नों या कियाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य के सभी प्रयत्न आर्थिक नहीं होते। इस प्रकार उसके अन्ती प्रयत्न आर्थिक यथा अनार्थिक दोनों प्रकार के होते हैं। परन्तु अर्थशास्त्र में आर्थिक प्रयत्नों का अध्ययन किया जाता है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दो प्रकार के कार्य करता है। प्रथम वे कार्य जो धन कमाने से संबंध रखते हैं। द्वितीय वे कार्य जिसे अर्जित किए हुए धन को आवश्यकताओं की पूर्ति पर ट्यूट करने से संबंध रखते हैं। अत अर्थशास्त्र उन कार्यों का अध्ययन करता है जिनके द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति करना संभव होता

- * 1776 में अर्थशास्त्र की शुरूआत हुई।
- * अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है यह Adam Smith द्वारा लिखा गया।
- * ~~With~~ Wealth of Nations (Book) → Adam Smith
- * Principle of Economics - 1890 → Alfred Marshall
- * Welfare Economics (Book) → Alfred Marshall
- * अर्थशास्त्र मानव कल्याण का अध्ययन है।
- * 1930-35 → Robbins
- * Scarcity Economics (Book) → Robbins
- * दुर्लभता का अर्थशास्त्र

Q- अर्थशास्त्र की परिभाषा देते हुए इसे समझाएँ।
 Ans → अर्थशास्त्र एक विषय वस्तु है, जिसमें हम आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करते हैं। इसके साथ ही हम दुर्लभ संसाधनों के अनुकूलतम् उपयोग करने की पुर्ति करने के समान्य तथा वैकल्पिक तरीकों तरिकों का अध्ययन करते हैं। यह एक अर्थव्यवस्था में किंचित् निर्धारण करने वाली इकाइयों का अध्ययन है, जिसमें आर्थिक क्रिया को चलाया जाता है।

Note → अर्थव्यवस्था - अर्थशास्त्र से भिन्न होते हैं।
 अर्थव्यवस्था में हम एक विशेष द्वेष के अंदर हो स्टेट आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन करते हैं।

Page No.
Date 14-08-2023

Adam Smith के अनुसार अर्थशास्त्र "धन का विज्ञान" है। Adam Smith ने 1776 में अपनी पुस्तक "Wealth of Nations" में अर्थशास्त्र को एक नवीन विषय के रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए इन्हे अर्थशास्त्र के जनक कहते हैं।

अर्थशास्त्र की जानकारी "Alfred Marshall" के द्वारा 1890 में उनकी पुस्तक "Principle of Economics" में अर्थशास्त्र को परिभ्राषित करते हुए उठींगे कहा है कि अर्थशास्त्र मानव कल्याण का अध्ययन है, जिसके अंतर्गत जन समुदायों के द्वारा धन, व्यापार, उत्पादन, विनियोग, आदि किया की जाती है।

Leoin Robbins के द्वारा अर्थशास्त्र को परिभ्राषित करते हुए कहा गया है कि यह एक सेसा विज्ञान है जो दुर्लभ संसाधनों और मानव व्यवहार के बीच का संबंध वेक्टिपकार्मक

* अमेरिका 1776 में आजाए क्या ?

Ajanta
Page No. 16 Date 08-23

Economics and Economy

Q - अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था में अंतर बताएँ।

~~Ans~~ → अर्थशास्त्र में हम आर्थिक क्रियाओं का विवरण करते हैं,

अर्थव्यवस्था

एक देश में हम आर्थिक क्रिया करते हैं तो उस देश को हम अर्थव्यवस्था (Economy) कहते हैं।

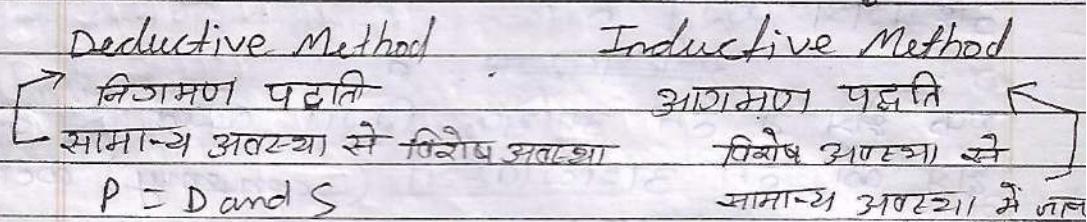
* अर्थव्यवस्था के केन्द्रीय समस्याएँ
Central problem of Economy

- आर्थिक क्रिया → ① How much? — कितने ?
 ② For whom? — किसके ?
 ③ where? — कहाँ ?
 ④ why? — क्यों ?

अर्थशास्त्र के क्षेत्र / अर्थव्यवस्था के गति (Scope)

- ① Micro Economics (व्यक्तिगत अर्थशास्त्र)
- ② Macro Economics (समाजिक अर्थशास्त्र)
- ③ Public Finance (लोक वित्त)
- ④ International Economics (अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था)
- ⑤ Economy (अर्थव्यवस्था)
- ⑥ Growth and Development (विकास एवं विकास)

* अर्थशास्त्र के पद्धति (Method of Economics)



Q - अर्थशास्त्र के पद्धति को लिखें ?

Ans → अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए अलग-अलग अर्थशास्त्रीयों के द्वारा मुख्यतः दो पद्धति को बताया गया है,

- ① निगमण पद्धति Deductive Method
- ② आगमण पद्धति Inductive Method

① निगमण पद्धति → इस पद्धति में हम अर्थशास्त्रीयों के अनुरूप सर्वमान्यतायों के आधार पर विशेष तथ्यों की तरफ अध्ययन करते हैं। उदाहरण के लिए जो सिद्धांत हमें पहले से पूता होता है उसके आधार पर नये तथ्यों की रोचना करता है।

पूर्ण स्पतियोगिता बाजार में किसी का निर्धारण सिद्ध होते पर करते हैं जैसे किसी हम उस बाजार के माध्यम से

Ajanta
Page No. 17-08-23

हम जबे विजाइ की शोर्ज करते हैं तो ^{उसे}
निगमण पद्धति कहते हैं। सरल रूपों में कर
करे तो इस पद्धति में हम सामाजिक अवधि
अवधिया से विशेष अवधिया में जाते हैं जो
तक तक एवं प्रभाण पर आधारित होता है।
निगमण पद्धति के सौपाल (STEPS)

① समस्या या सिद्धान्त की शोर्ज

- ② उपलब्ध मानवता
- ③ नई परिकल्पना
- ④ परिकल्पना की जांच

निगमण पद्धति के उठा →

- ① सरलता
- ② स्पष्ट विकास
- ③ वाहनविक
- ④ निष्पक्ष
- ⑤ सर्विच्यापक
- ⑥ शक्तिशाली

(2) आगमण पद्धति → इस पद्धति में हम एक
विशेष अवधिया से सामाजिक अवधिया की ओर
आकर्षण करते हैं। उदाहरण के लिए, हमारे
पाल परिवारिक परिवर्तनी के अनुसार एक
विशेष समर्थन आता है। उस समर्थन की
अहंगता एक सामाजिक अवधिया में जाते हैं।
अर्थात् इस पद्धति में विशेष रूप से सामाजिक

Page No.
Date 17-08-23

की तरफ जाते हैं।

इस पद्धति के स्तेप्स (Steps)

① सामान्यकरण

② समस्या

③ निरक्षण

④ आफड़ा को इकठ्ठा करना

आगमण पद्धति के गठण

① अधिक्षय के लिए उपयोगी

② उपयोगकर्ता पद्धति

③ समय की वर्चता

④ पुरानी मांगताओं को हटाना

⑤ नई आवश्यक धारनाओं का निर्माण

Date - 18-08-23

Q-1 अर्थशास्त्र क्या है? इसके निम्न फ़ैलो को लिखें।

Q-2 अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था में क्या अंतर है। ३५।८२०। सहित समझाएं।

Q-3 अर्थशास्त्र की पद्धति को लिखें।

Q-4 किसी अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समर्पणात्मकता है। (या) (या) क्ये।

२-समानुपात

Ajanta

Page No.
Date 19-08-23

उपभोग → किसी पदार्थ की उपयोगिता को नष्ट करना ही उपभोग कहलाता है।

उपभोक्ता → किसी कस्तु की उपयोगिता को नष्ट करने वाला उपभोक्ता कहलाता है।

उपयोगिता →

माँग → किसी कस्तु की उपयोगिता के बदले जो मुजाहिद किया जाता है तो उसे माँग कहते हैं।

X → Demand (माँग) ← X

* Law of Demand (माँग के नियम)

$$D \propto \frac{1}{P}$$

* उपयोगिता क्या है? (Utility)

किसी वस्तु का वह मुण जो उस वस्तु का माँग उपयोग करता है। यह उपयोगिता कहते हैं।

उपभोक्ता क्या है? (Consumer)

किसी वस्तु की उपयोगिता को नष्ट करने वाला उपभोक्ता कहलाता है।

उपभोग (Consumer) - किसी वस्तु की उपयोगिता को नष्ट करना / उपभोग करना

① मांग उत्पन्न कैसे होता है?

- (a) उपयोगिता
- (b) कीमत से
- (c) आवश्यक से
- (d) मात्रा से

* मांग → किसी वस्तु के विशेष गुण से प्रभावपूर्ण इच्छा उत्पन्न होना ही मांग है।

मांग के पूरा होने की कार्ति -

- ① महत्वपूर्ण इच्छा / प्रभावपूर्ण इच्छा
- ② समय
- ③ कीमत

मांग के नियम → किसी विद्यमान की त्यारत्या 1890 में अंलफोड मार्केट के द्वारा उनकी पुस्तक किनिमित्ता के अनुसार बनायी गई तथा उनकी कीमत घटने पर उनकी धर्ता जाती है तथा उनकी कीमत बढ़ने पर उनकी मांग बढ़ जाती है।

Principle of Economics (1890), मांग के नियम के अनुसार किसी वस्तु की कीमत घटने पर उनकी धर्ता जाती है तथा उनकी कीमत बढ़ने पर उनकी मांग बढ़ जाती है।

मांग के प्रकार - उपयोगिता के हिसाब से

- ① कीमत प्रेरित मांग
- ② आवश्यकता प्रेरित मांग
- ③ आदि विविध मांग (संबंधित वस्तु की कीमत से प्रभावित मांग)

29-08-23

Page No. 39-08-2023

लागत (cost) \Rightarrow किसी वस्तु की उत्पादन में
कुल खर्च को लागत (cost) कहते हैं।

किमान = cost + Profit को किमत कहते हैं।

* मांग के नियम (Law of Demand)

→ किसी वस्तु की किमत बढ़ने पर मांग घट जाती है तथा इसके विपरित किमत घटने पर मांग बढ़ जाती है।

शर्त:— बाकी तत्व फिर दोनों कालियाँ।

* मांग को प्रभावित करने वाले तत्व —

① किमान ② समय ③ स्थान ④ गुण
⑤ आवश्यकता ⑥ बाजार का अवकाश ⑦ संबंधित वस्तु

⑦ संबंधित वस्तु — ① पुरक वस्तु

Example — पेट्रोल और कार

② स्थानपूर्ण वस्तु

Eg. चाय और कॉफी

① गुण और चीज़ी

$D \rightarrow$ समानुपात

29.08.23

Page No.
Date
29.08.2023

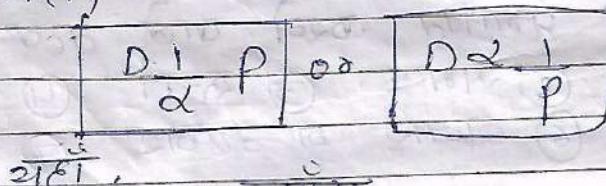
- Q-1 मांग के नियम को लिखके तथा इसे देववाचिक के द्वारा दर्शाएँ।
- Q-2 मांग को प्रभावित करने वाले कोई क्या हैं इसकी व्याख्या करें।
- Q-3 युक्त बट्टु तथा स्थानपन्न बट्टु में अंतर व्यष्ट करें।

Date - 04-09-23

Q① मांग के नियम \rightarrow किसी बट्टु कि किमत बढ़ती है तो उस बट्टु की मांग कम हो जाती है तथा ही पिपरीत बट्टु की कम हो जाती है तो उस बट्टु की मांग बढ़ जाती है।

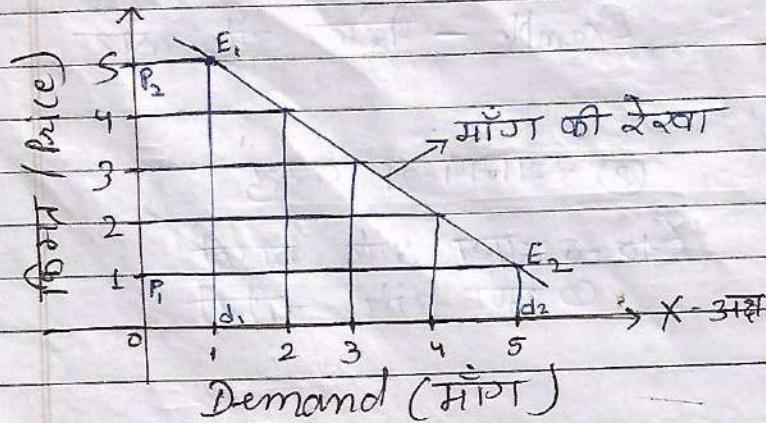
इसी \rightarrow बाकी सारे तत्व स्थिर हैं।

अर्थात्,



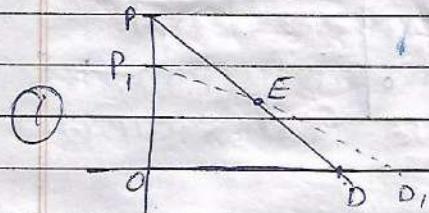
$$D = \text{मांग}$$

$$P = \text{किमत}$$



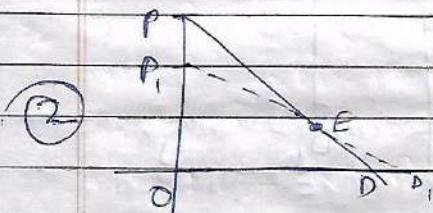
मांग की लोच (Elasticity of Demand)

Note - मांग की लोच मांग के विचार पर आधारित है।



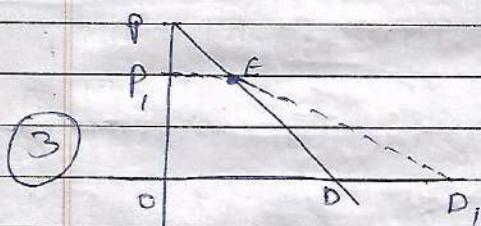
$$PE = ED$$

Price = Demand



$$PE > ED$$

Price > Demand



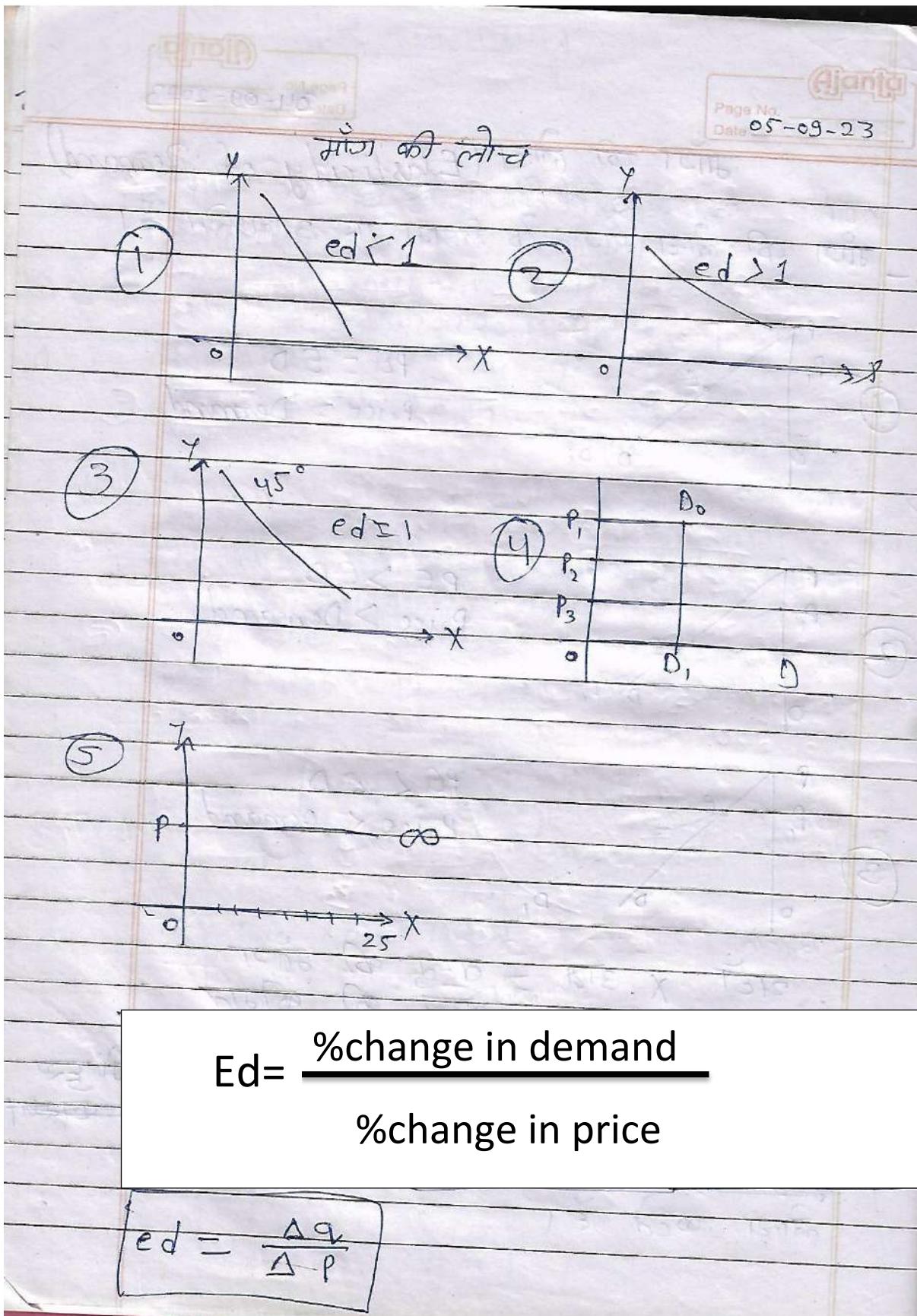
$$PE < ED$$

Price < Demand

यदि $x\text{-अक्ष} = \text{पर्याप्त की मांग}$

$y\text{-अक्ष} = \text{पर्याप्त की मात्रा}$

मांग की लोच \rightarrow किसी वर्ग की मत में दुर्घटनाक कारण मांग में हुए परिवर्तन के बारे में अधिक जानकारी की दर की मांग की लोच बढ़ती है।



Ajanta
Page No. 11-09-2023

* मांग की लोच के प्रकार \rightarrow थठ मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

- ① इकाई से अधिक \rightarrow जब मांग की लोच रफ्क से अधिक होती है तो वस्तु में $ED < 1$ प्रतिशत (%) परिवर्तन, कीमत में $ED > 1$ प्रतिशत (%) परिवर्तन से अधिक होती है।
- ② इकाई के बराबर ($ED = 1$) \rightarrow वस्तु में $ED = 1$ प्रतिशत (%) परिवर्तन, कीमत में $ED = 1$ प्रतिशत (%) परिवर्तन के बराबर हो।
- ③ इकाई से कम \rightarrow जब वस्तु में $ED < 1$ परिवर्तन, कीमत में $ED > 1$ परिवर्तन से कम हो।

④ अवृद्धि \rightarrow अ-वृद्धि प्रकार : —

- ① कीमत में परिवर्तन होने के बाद भी मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

उपर्युक्त

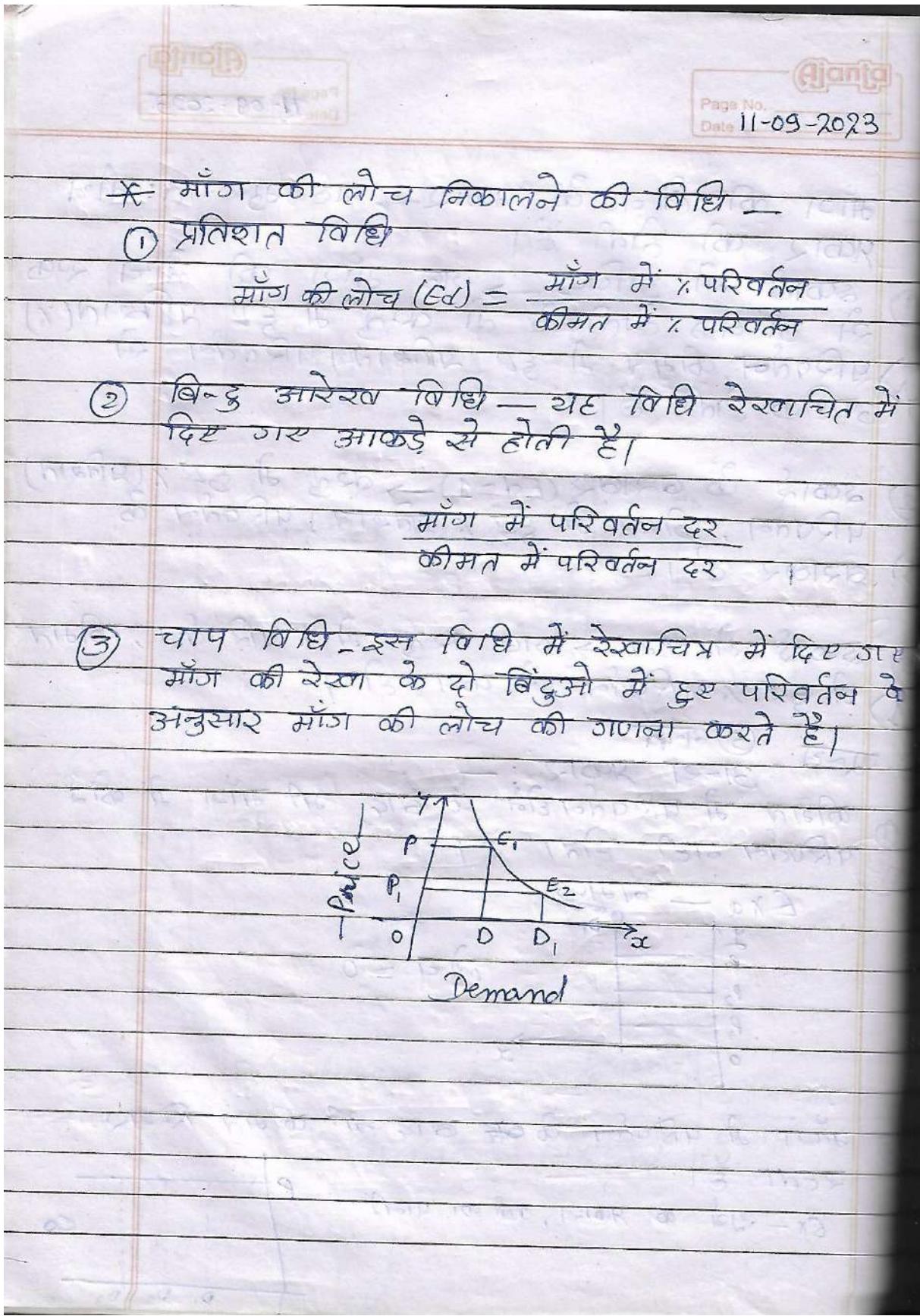
Ex - नमाय

लोच = 0

② मांग में परिवर्तन के बाद भी कीमत रियर रहती है।

उपर्युक्त

Ex - सूची का बाहर, वस्तु का पानी



Q - बाजार में किसी वस्तु की कीमत में 5% की छूट से उसके मांग में 10% की कमी होती है तो मांग की लोच ज्ञात करें।

$$Sol \Rightarrow Ed = \frac{\text{मांग में } \% \text{ परिवर्तन}}{\text{कीमत में } \% \text{ परिवर्तन}}$$

$$Ed = \frac{10}{5} = (-) 2$$

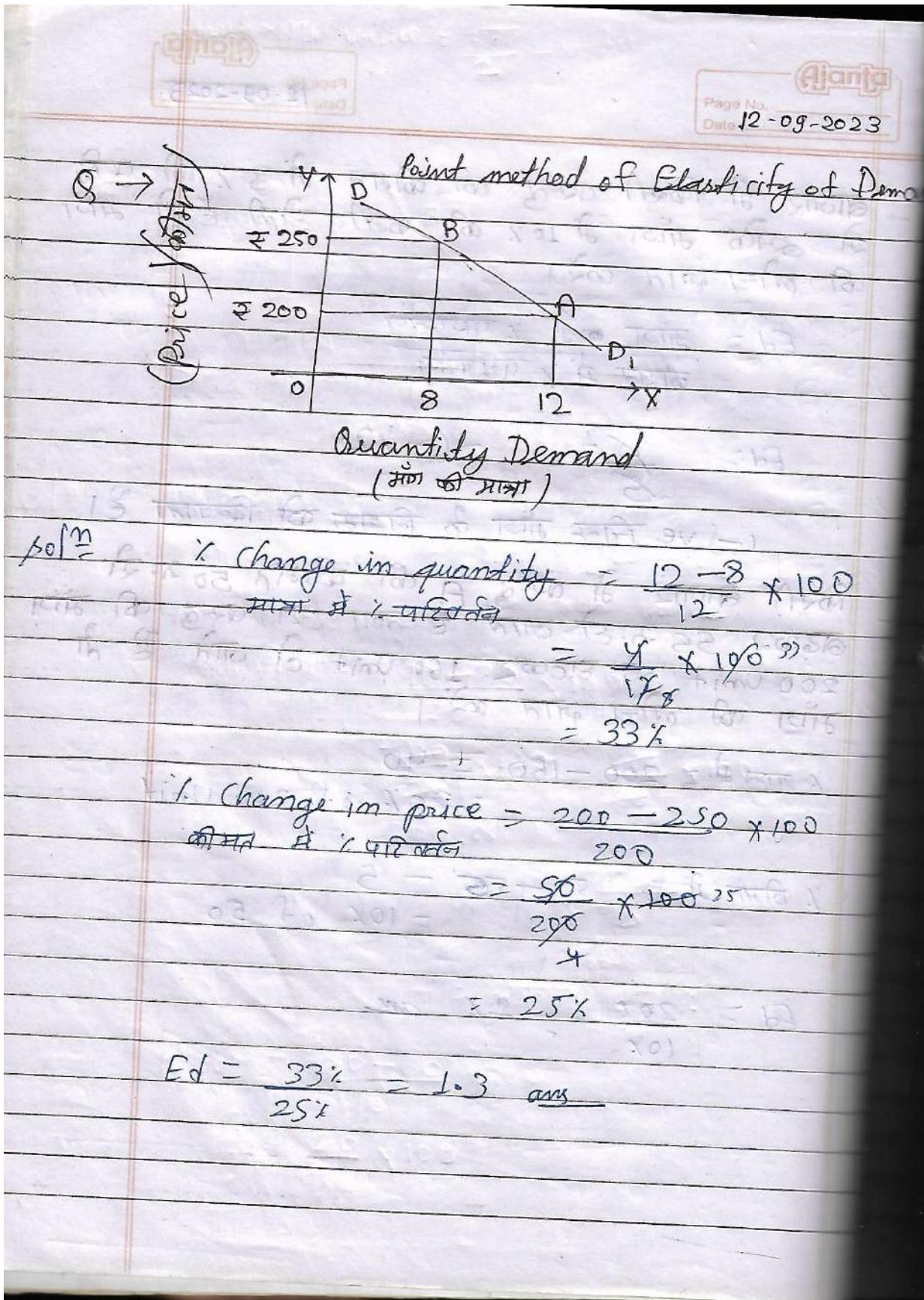
(-) ve चिन्ह मांग के बिचम के क्रियता है।

Q - किसी बाजार में वस्तु A की कीमत 50 रु. से लेकर 55 रु. हो जाती है तथा उस वस्तु की मांग 200 Unit से घटकर 160 Unit हो जाते हैं तो मांग की लोच ज्ञात करें।

$$Sol \Rightarrow \% \text{ मांग में} = 200 - 160 = 40 \\ = 20\% \text{ of } 200 \text{ Unit}$$

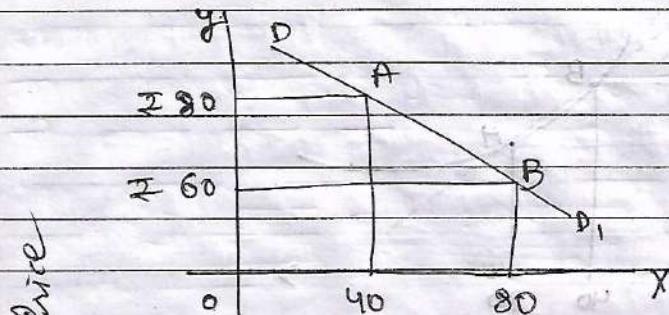
$$\% \text{ कीमत में} = \frac{55 - 50}{50} = 5 \\ = 10\% \text{ of } 50$$

$$Ed = \frac{20\%}{10\%} = 2 \text{ ans}$$



Point method of Elasticity of Demand

a-



Quantity Demanded

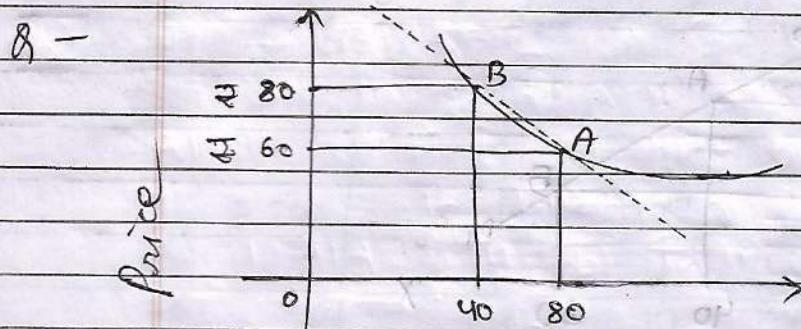
$$\% \text{ change in quantity} = \frac{40 - 80}{40} \times 100 \\ = \frac{-40}{40} \times 100 \\ = -100\%$$

$$\% \text{ change in price} = \frac{80 - 60}{80} \times 100 \\ = \frac{20}{80} \times 100 \\ = 25\%$$

$$Ed = \frac{100}{25} = 4\%$$

formula → Mid value = $\frac{31+32}{2}$ - value

Ajanta
Page No. _____
Date 12-09-2023



Quantity Demand

Soln

% Change in

% in change = $\frac{\text{End value} - \text{Start value}}{\text{Mid point value}} \times 100$

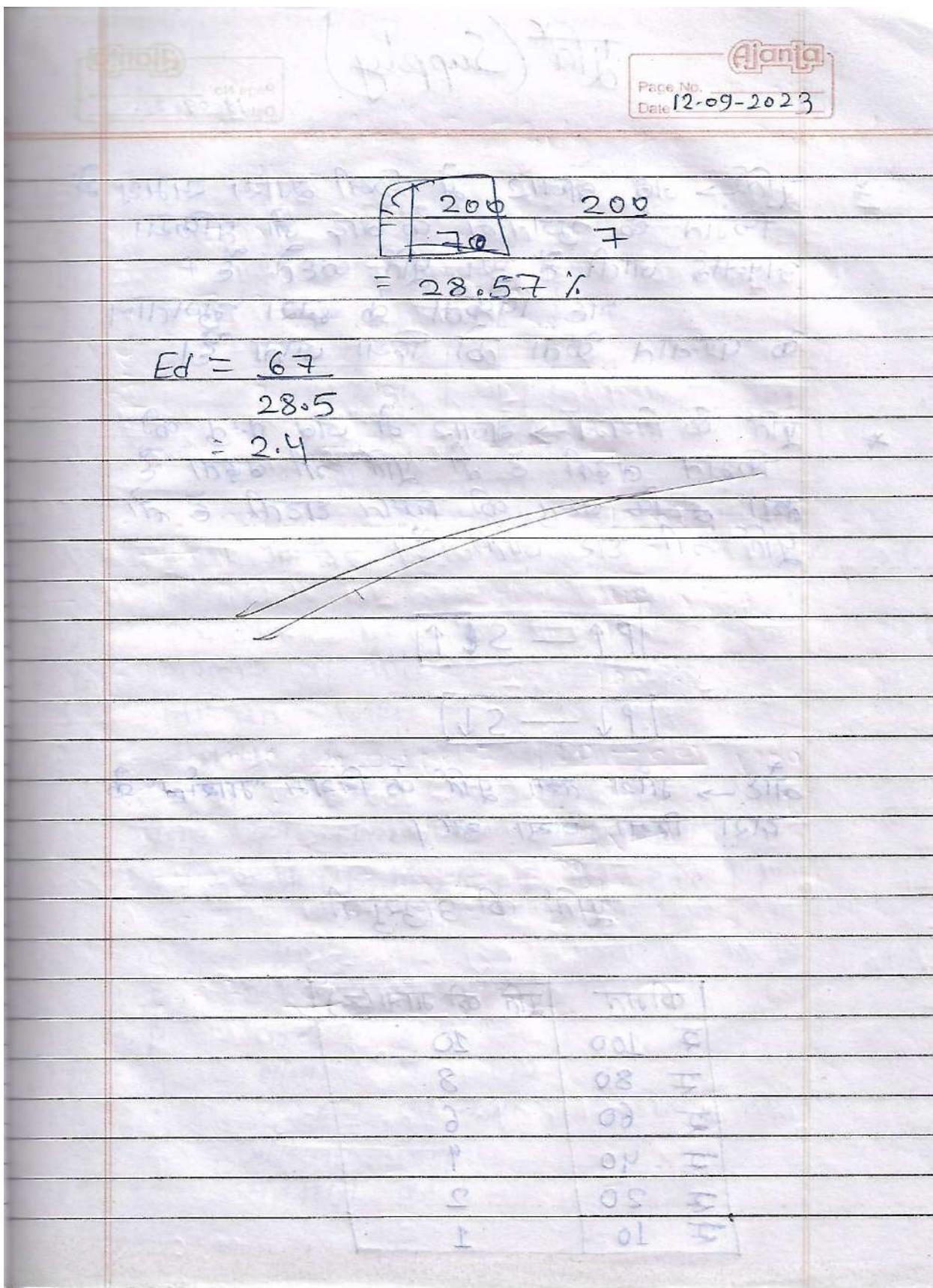
$$\text{quantity} = \frac{40 - 80}{20} \times 100$$

$$\begin{aligned} &= \frac{-40}{20} \times 100 = \frac{40^2}{60} \times 100 \\ &= 200 \% \quad = 200 \\ &= \frac{200}{3} \\ &= 66.6 \% \end{aligned}$$

= ~~67%~~

$$\text{Price} = \frac{80 - 60}{70} \times 100$$

$$= \frac{20}{70} \times 100$$



पूर्ति (Supply)

Page No. 19-09-23

- * पूर्ति → जब बाजार में किसी वस्तु समय में किमत के अनुतान के बाट जो सुनिया अपनाई जाती है उसे पूर्ति कहते हैं। यह पिछला के द्वारा अनुतान के पश्चात की कीमतों को किया जाता है।
- * पूर्ति के नियम → बाजार में जब वस्तु की किमत बढ़ती है तो पूर्ति भी बढ़ती है तथा इसके बढ़ते की किमत घटती है तो पूर्ति भी घट जाती है।

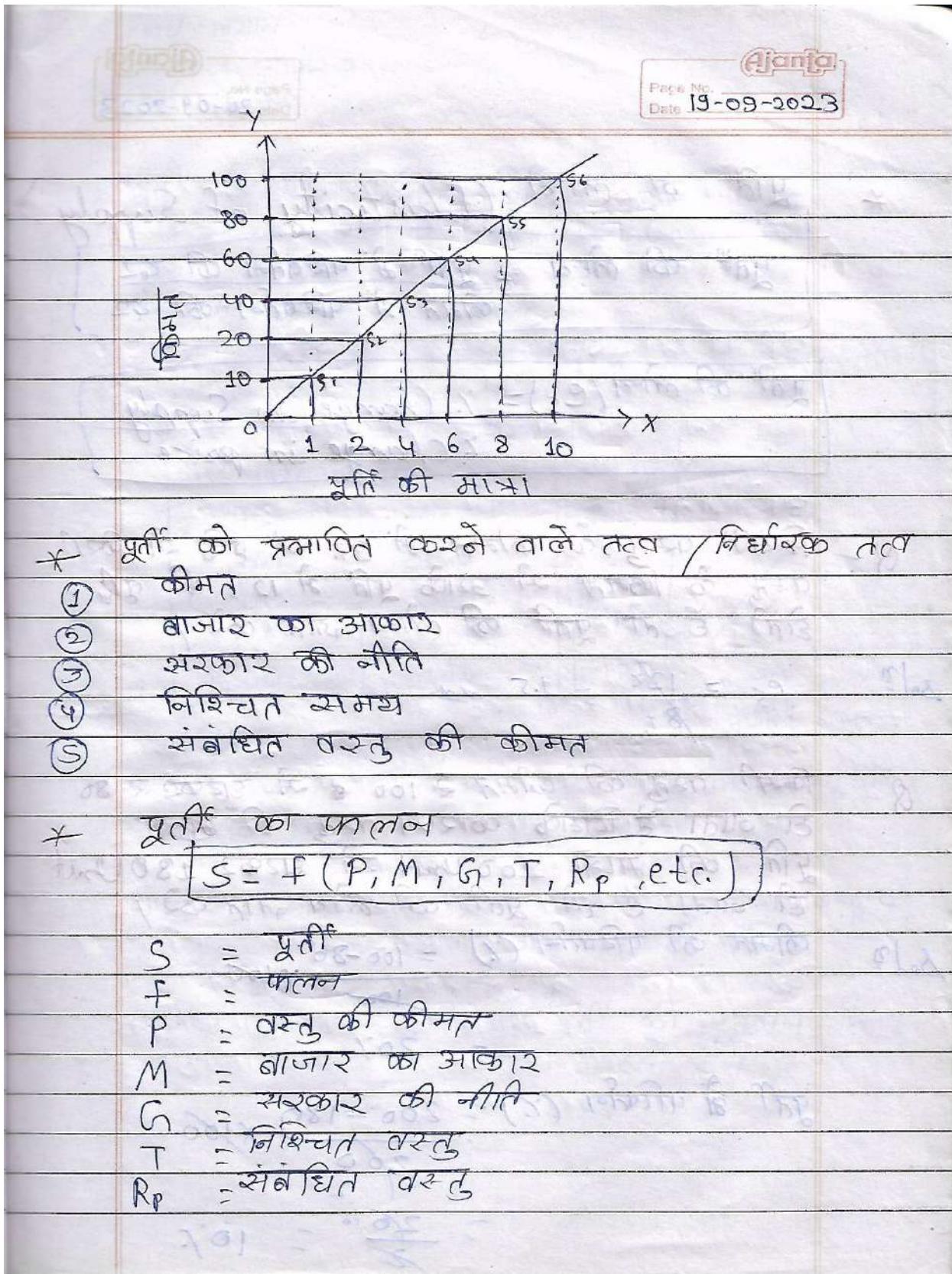
$$\boxed{P \uparrow - S \downarrow \uparrow}$$

$$\boxed{P \downarrow - S \downarrow}$$

टोट → माँग तथा पूर्ति के नियम "मार्शल" के द्वारा किया गया था।

पूर्ति की अवसुन्धि

कीमत	पूर्ति की मात्रा(क.)
₹ 100	10
₹ 80	8
₹ 60	6
₹ 40	9
₹ 20	2
₹ 10	1



* पूर्ति की लोच (Elasticity of Supply)

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{परिवर्तन की दर}}{\text{कीमत में परिवर्तन की दर}}$$

$$\text{पूर्ति की लोच (e_s)} = \frac{\% \text{ Change in Supply}}{\% \text{ Change in price}}$$

Q - किसी वस्तु के कीमत में 8% की वृद्धि से इसी वस्तु के कीमत से उसके पूर्ति में 12% की वृद्धि होती है तो पूर्ति की लोच ज्ञात करें।

$$e_s = \frac{12\%}{8\%} = 1.5$$

Q - किसी वस्तु की कीमत ₹ 100 से घटकर ₹ 80 हो जाता है जिसके कारण वस्तु की मात्रा 50% की मात्रा 200 unit से घटकर 180 unit हो जाता है तो पूर्ति की लोच ज्ञात करें।

$$\text{कीमत की परिवर्तन (\%)} = \frac{100 - 80}{100} \times 100$$

$$= 20\%$$

$$\text{पूर्ति की परिवर्तन (\%)} = \frac{200 - 180}{200} \times 100$$

$$= \frac{20}{200} = 10\%$$

Rent - रेन्ट

Revenue - राजवाद

Cost - लागत

Ajanta

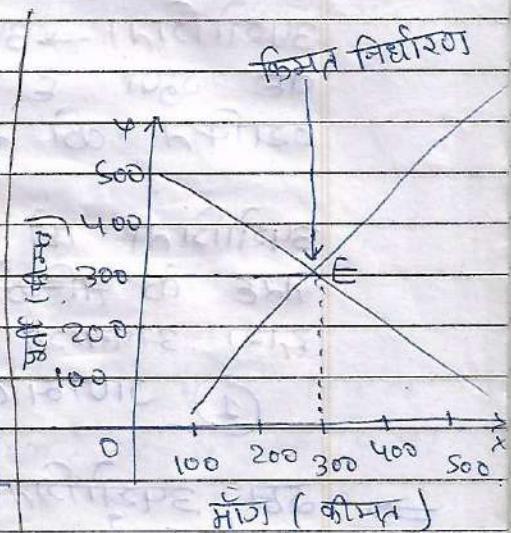
Page No. 20-09-2023

$$\text{गुप्त की लौटी} (C_s) = \frac{10\%}{20\%} = 0.5 \text{ कर्म}$$

माँग और फूटी का संतुलन

विभाग निर्धारण

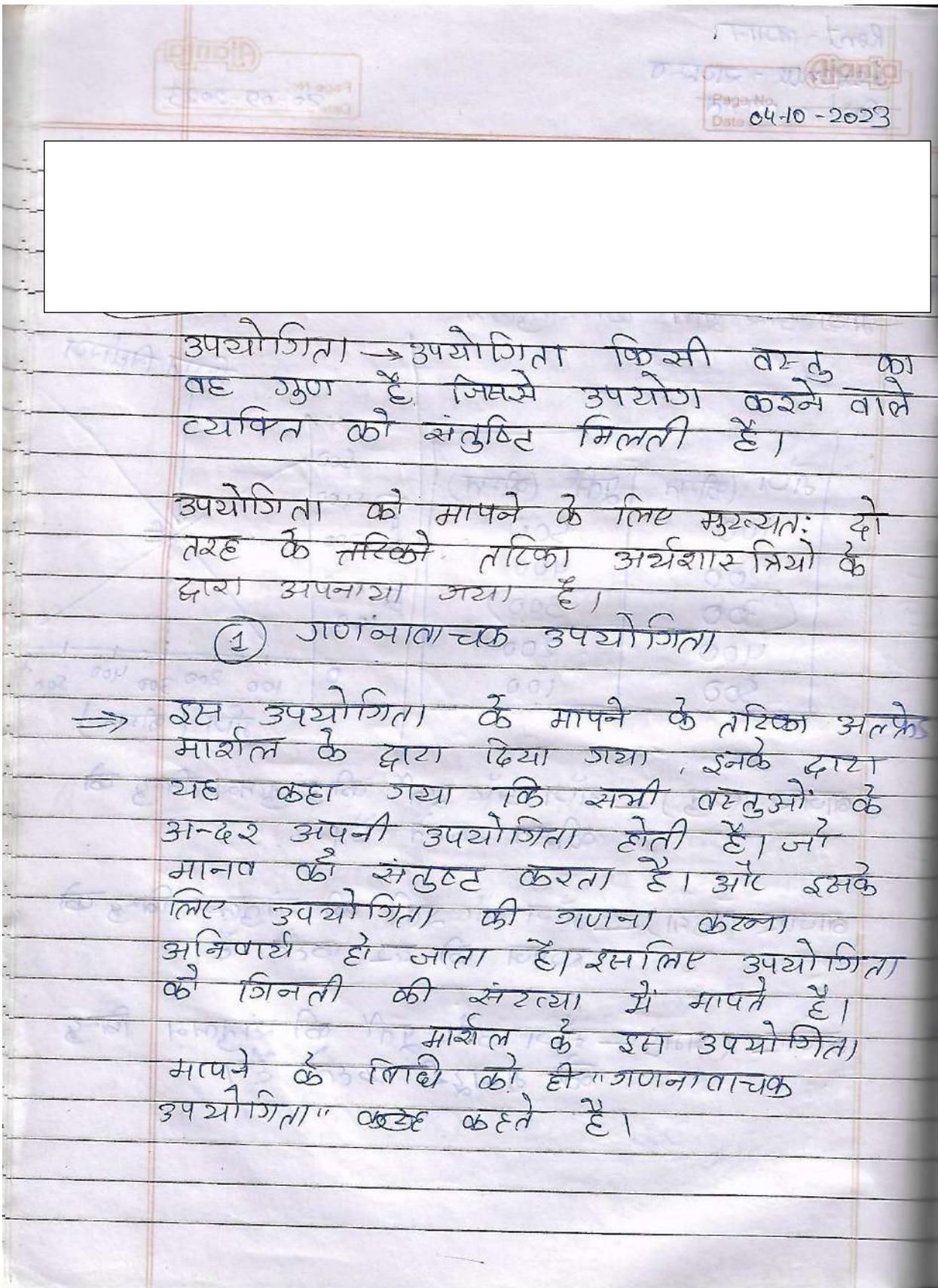
माँग (कीमत)	फूटी (कीमत)
100	500
200	400
300	300
400	200
500	100



बाजार (परस्त) — माँग और फूटी की संतुलन बिन्दु को विभाग कहते हैं।

बाजार (भुक्त) — माँग और फूटी की संतुलन बिन्दु को उद्याज की दर कहते हैं।

बाजार (श्रम) — माँग और फूटी की संतुलन बिन्दु को मजदूरी कहते हैं।



Page No. 04-10-2023

Marshall

AB- 1
2
3
4
5
गणना / गिनी / मात्रा
(Number)

Cardinal Utility
गणनाचक उपयोगिता

② क्रमावारीक उपयोगिता

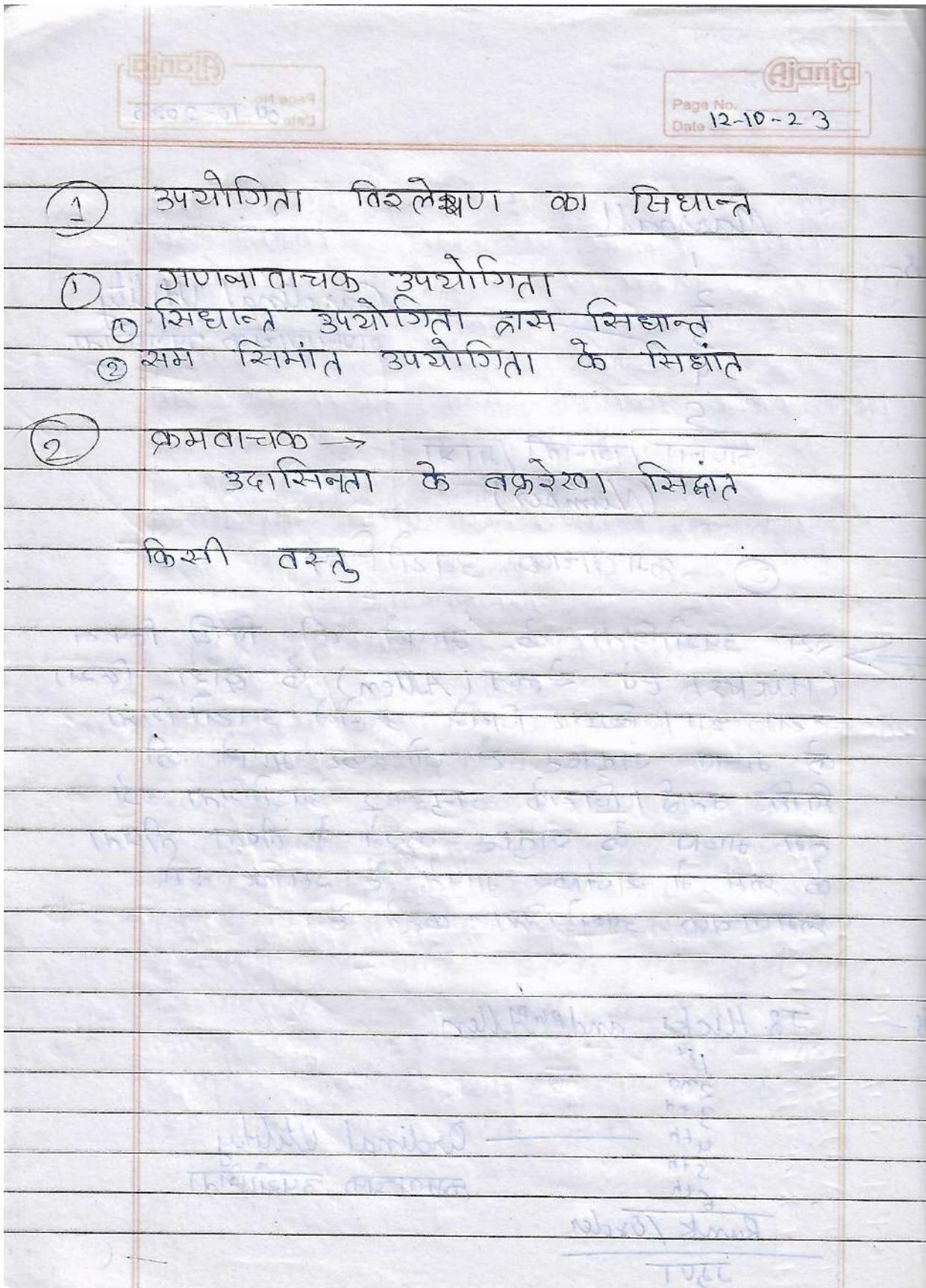
→ इस उपयोगिता के मापने की विधि हिक्स (Hicks) द्वारा अलेन (Allen) द्वारा दिया गया। जिसने अद्वैत उपयोगिता के मानव संतुष्टि से जो कर्तव्य मापने की विधि बताई। जिसके अनुसार उपयोगिता के हम मानव के संतुष्टि करने के लिए नीति के कर्म में अलग-अलग गापते हैं। इसलिए इसे "क्रमावारीक उपयोगिता" कहते हैं।

AB- J.R. Hicks and R.G. Allen

1st
2nd
3rd
4th
5th
6th
Rank / Order

Cardinal Utility
क्रमावारीक उपयोगिता

TOT



कुल उपयोगिता → जब उपयोगिता वस्तु की
कुल इकाई का उपयोग करता है तो
प्रत्येक इकाई से मिलने वाले उपयोगिता
के उपयोग को कुल उपयोगिता कहते हैं।

वस्तु की इकाई	सिद्धांत उपयोगिता	कुल उपयोगिता
1	2	2
2	4	6
3	3	9
4	1	10
5	4.	14
6	3	17
7	4	21
8	5	26

सिमान्त उपयोगिता नास → इस सिद्धांत के
अनुसार प्रत्येक वस्तु के प्रति इकाई उपयोग
के उसकी उपयोगिता में नास होती है।
अर्थात् उपभोक्ता के सत्तुपि में भी नास
होती है।

① वस्तु की प्रकृति कोई परिवर्तन
उपयोगिता उपभोक्ता की कमी नहीं बढ़ानी
चाहिए।

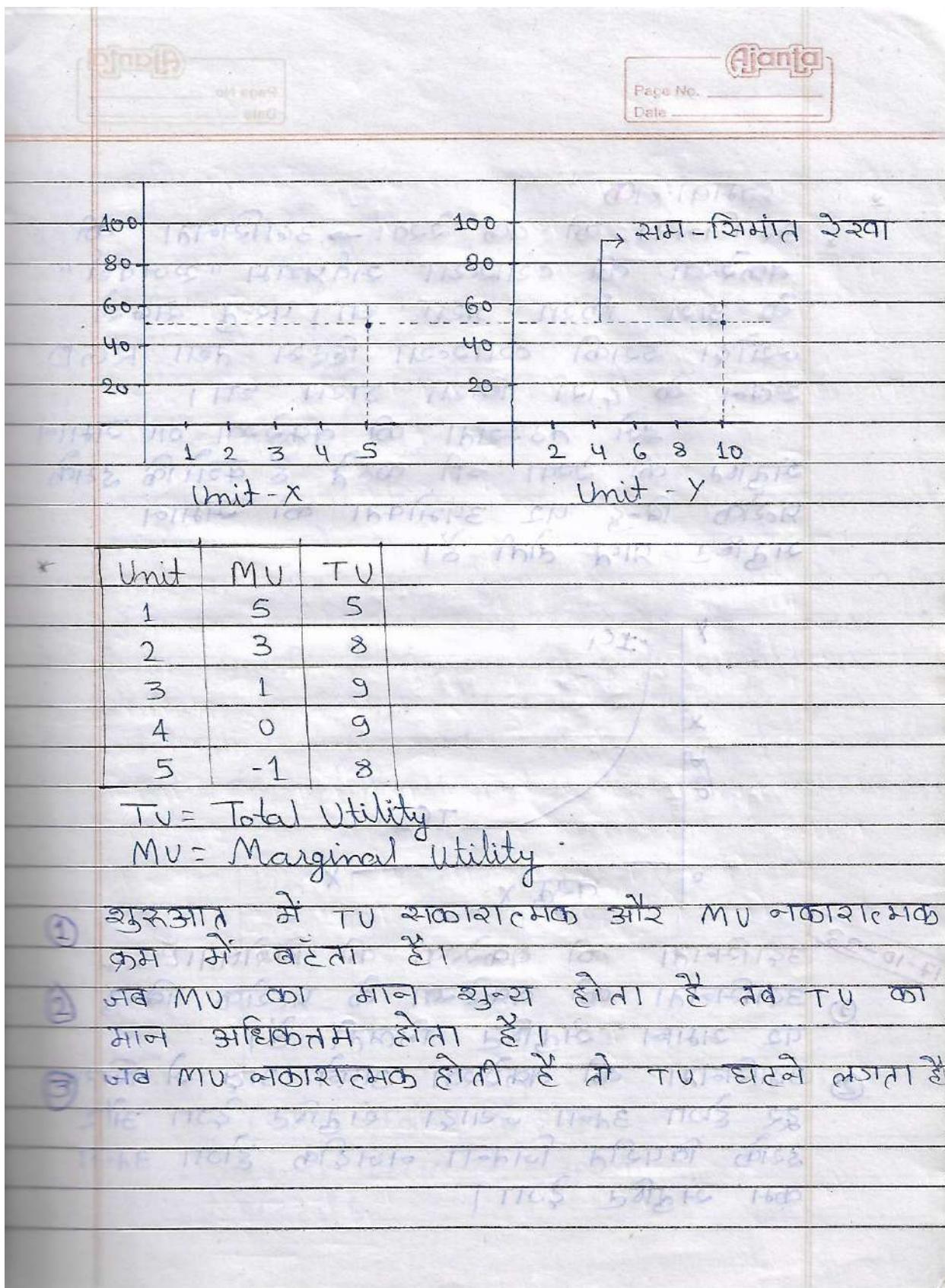
वस्तु के गुण में कोई परिवर्तन नहीं होनी
चाहिए।

सामा सिमांत उपयोगिता के नियम
 → यह नियम गोसेन का व्यक्तिय नियम
 भी कहलाता है। इस नियम के अनुसार
 यदि किसी व्यक्ति के पास उसी वस्तु
 है जिसे वह विभिन्न प्रकार से प्रयोग
 कर सकता है तो वह इसका अनेक प्रयोग
 में इस प्रकार का वितरण करेगा कि
 उसकी उपयोगिता समान रहेगा तथा साथ
 ही उसके पास अंतिम मुद्रा के रूप में
 कुछ भी छोड़ न दें।

इस नियम की व्याख्या ये
 कि यह व्यक्ति को अधिकतम सनुष्टि
 की प्राप्ति होती है। यह भी जब
 वस्तुओं के सिमांत उपयोगिता और कीमत
 के समान रहे।

$$\frac{MU_X}{P_X} = \frac{MU_Y}{P_Y} = \dots = MUM$$

Unit	X सेव	Y सेव	$\frac{MU_X}{P_X}$	$\frac{MU_Y}{P_Y}$	
1	100	100	10	20	10 20
2	90	90	9	18	11 18
3	80	80	8	16	12 16
4	70	70	7	14	14 14
5	60	60	6	12	12 12
6	50	50	5	10	10 10
7	40	40	4	8	8 8
8	30	30	3	6	6 6
9	20	20	2	4	4 4
10	10	10	-	-	-



Page No. _____
Date _____

* लामता-वाक्य

* उदासिनता की वक्र रेखा \rightarrow उदासिनता की वक्ररेखा की व्याख्या सर्वप्रथम "रुजवडा" के द्वारा किया गया था। परन्तु सबसे ज्यादा इसकी व्याख्या हिंदू तथा RJD राजनीति के द्वारा किया गया था।

इसे तरह गता की वक्ररेखा वा समान संतुष्टि की रेखा भी कहते हैं क्योंकि इसके प्रत्येक बिन्दु पर उपमोक्ष को समान संतुष्टि प्राप्त होती है।

17-10-23

(1) उदासिनता की वक्ररेखा की विशेषताएँ \rightarrow

(1) उदासिनता की वक्ररेखा के प्रत्येक बिन्दु पर समान संतुष्टि मिलती है।

(2) उदासिनता की वक्ररेखा अपने आप से जितना दूर होगा उतना ज्यादा संतुष्टि देगा और इसके विपरीत जितना नजदीक होगा उतना कम संतुष्टि देगा।

- ③ उदासिनता की वक्ररेखा आपस में बही काटती है।
- ④ उदासिनता की वक्ररेखा कभी भी अपने आप को बही काटती है।
- ⑤ उदासिनता की वक्ररेखा का संतुलन बजट रेखा की सहायता से होता है।
- ⑥ उदासिनता की वक्ररेखा अपने घूम-विन्डु से उत्तर (Convex) होती है।

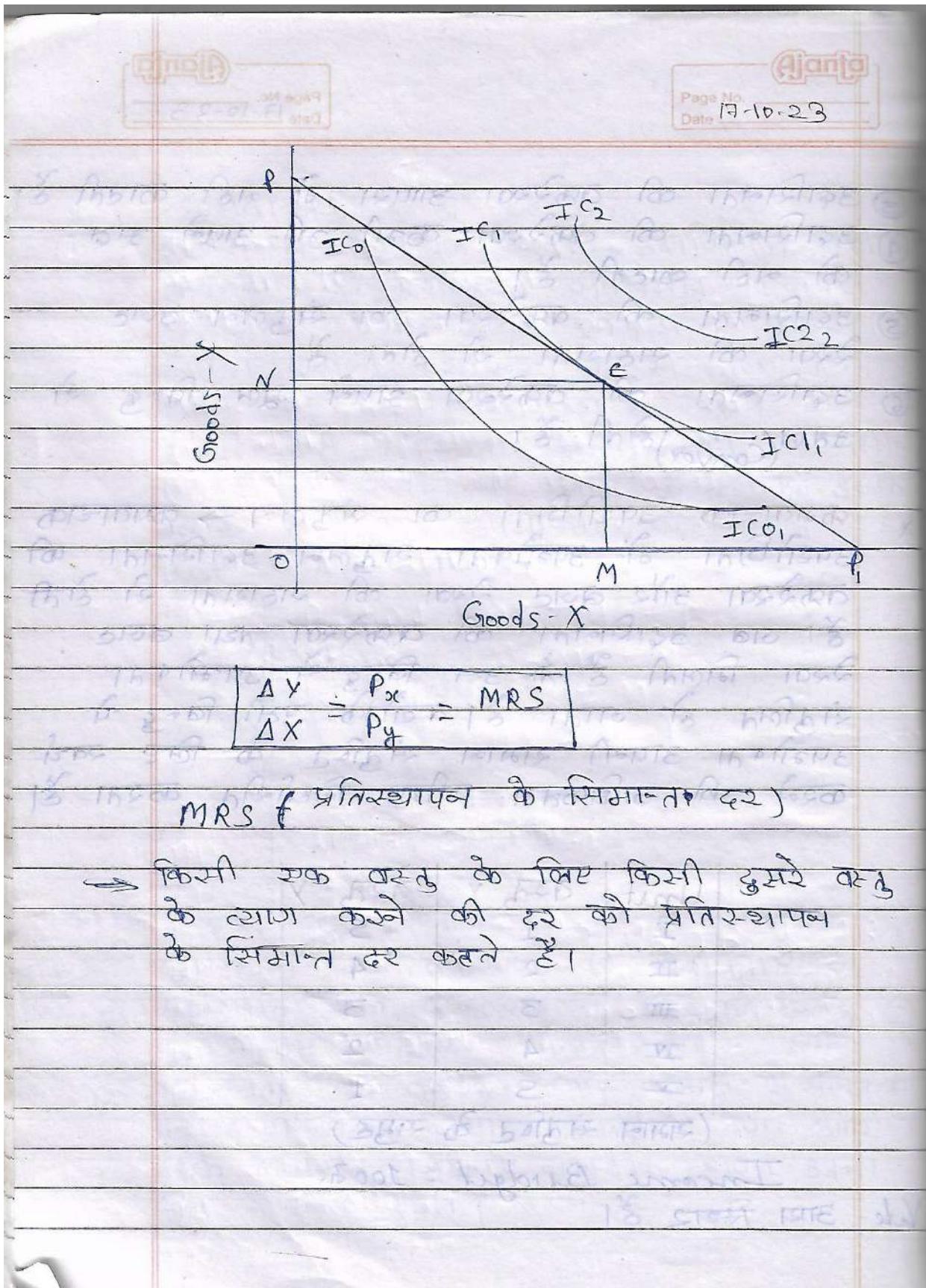
* कमवाचक उपयोगिता का संतुलन \rightarrow कमवाचक उपयोगिता में उपमोक्ता संतुलन उदासिनता की वक्ररेखा और बजट रेखा ली सहायता से होती है। जब उदासिनता की वक्ररेखा तथा बजट रेखा मिलती है तो उस विन्डु पे उपमोक्ता संतुलित हो जाता है। क्योंकि उसी विन्डु पे उपमोक्ता अपनी समान संतुष्टि के लिए खर्च करने की अधिकतम सीमा निर्धारित करता है।

Unit	वस्तु X	वस्तु Y
I	1	5
II	2	4
III	3	3
IV	4	2
V	5	1

(समान संतुष्टि के समूह)

Income Budget = 100 रु.

Note - आय स्थिर है।



बाजार

* बाजार → बाजार एक व्यापास जगह होता है जहाँ क्रेता और विक्रेता आपस में बिलकुल एक कीमत निर्धारण करते हुए वर्टु एवं सेवा की उचित विक्री (क्रय-विक्रय) करते हैं। बाजार में विक्रेता को प्रति पक्ष तथा क्रेता को मांग पक्ष कहा जाता है प्राकृतिक रूप से बाजार कई प्रकार के होते हैं।

① पूर्ण प्रतिवौगिता का बाजार → यह ऐसी बाजार व्यवस्था है जिसमें क्रेता और विक्रेता अधिक मात्रा में होते हैं तथा बाजार में क्रेता और विक्रेता के लिए किसी प्रकार की झकापट नहीं होती है अर्थात् इस बाजार में मुफ्त बाजार तथा मुफ्त निकास होती है।

② उकादिकार का बाजार → इस बाजार व्यवस्था में क्रेता की संख्या अधिक होती है परन्तु विक्रेता की संख्या इस ही होती है इसमें प्रबंध तथा निकास प्रतिवंशित होते हैं।

③ आपादिकार का बाजार → इस बाजार व्यवस्था में एक समस्पी वर्टु के कुछ विक्रेता बाजार में उस वर्टु के लिये हेतु समृद्ध बनाते हैं तथा वर्टु का विक्रय करते हैं।

Firm

फर्म → गृह लक संगठन है जिसमें उत्पादनों के साधनों के प्रयोग करके वर्तु एवं सेवा को विकल्प हेतु तैयार किया जाता है

फर्म का उद्देश्य मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं

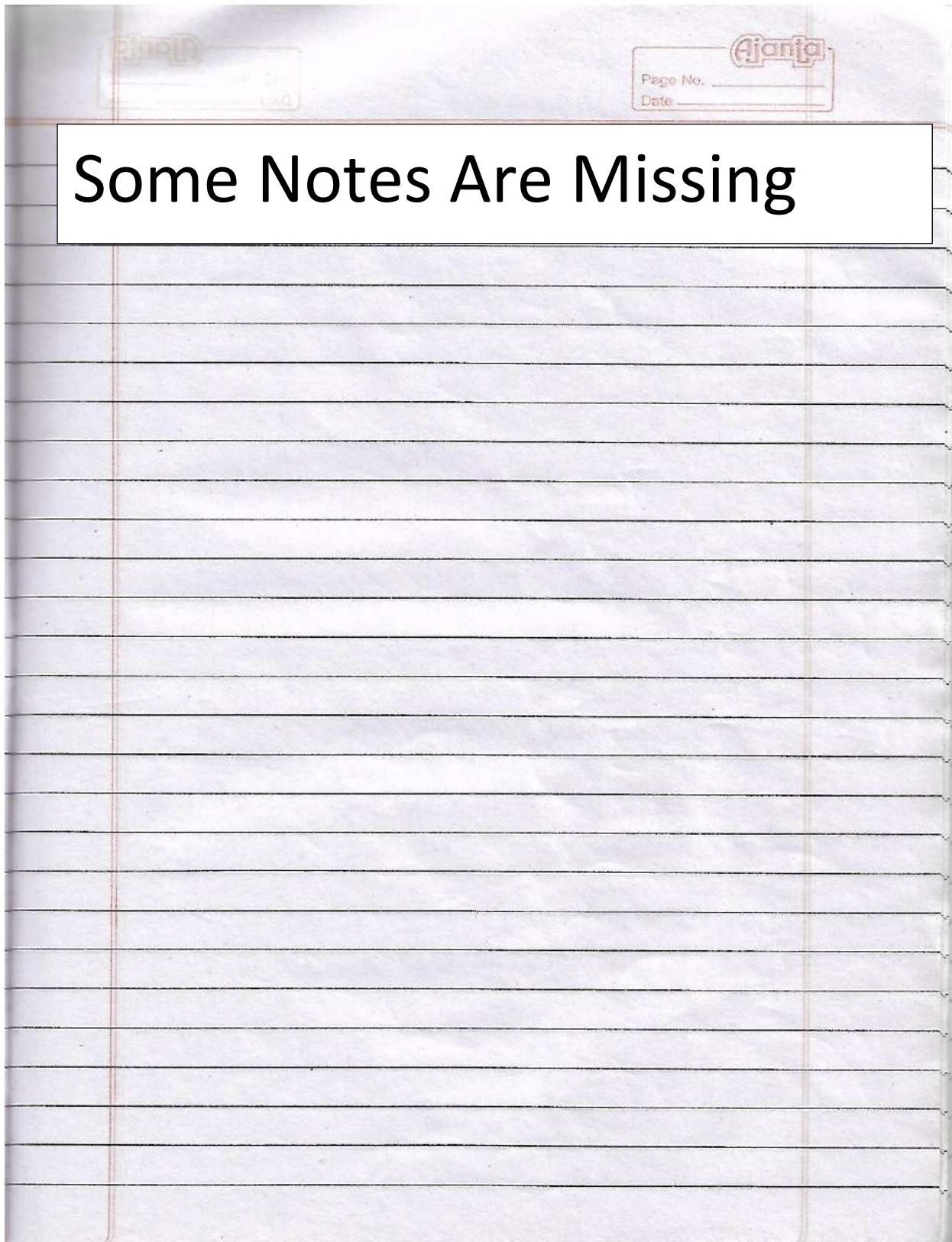
- ① लाभ को अधिकतम करना
- ② विकल्प को अधिकतम करना

राजस्व - लागत = लाभ

$R - C = \text{Product}$	$MR - MC = \text{Profit}$
$R = \text{Revenue}$	$MR = MC$
$C = \text{cost}$	$(MR > MC)$

AU = औपचारिक उपयोगिता
 MU = सीमान्त उपयोगिता
 TU = कुल उपयोगिता
 AC = औपचारिक लागत
 MC = सीमान्त लागत
 TC = कुल लागत
 AP = औपचारिक उत्पाद
 MP = सीमान्त उत्पाद
 TP = कुल उत्पाद
 AR = औपचारिक राजस्व
 MR = ~~औपचारिक~~ सीमान्त राजस्व
 TR = कुल राजस्व

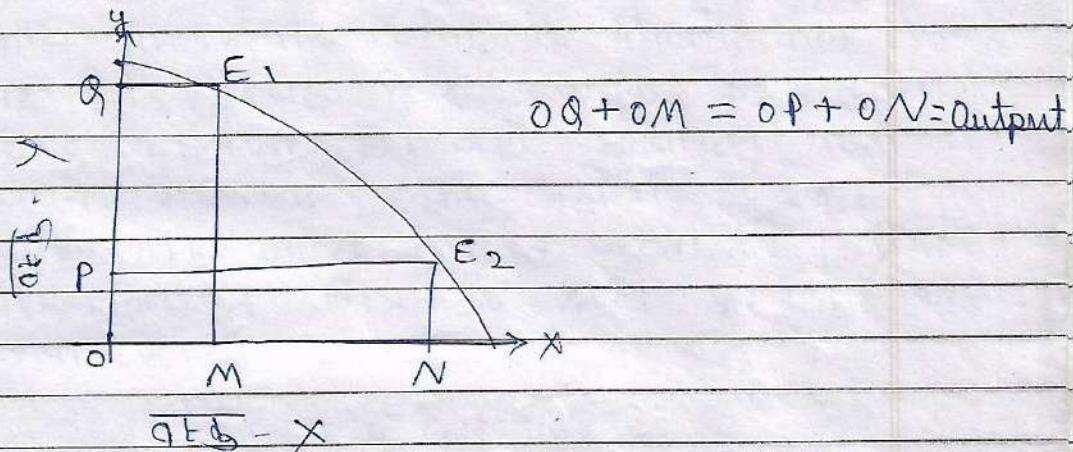
① $MR, TR \text{ और } AR$
 $MC, TC \text{ और } AC$
 $MP, TP \text{ और } AP$



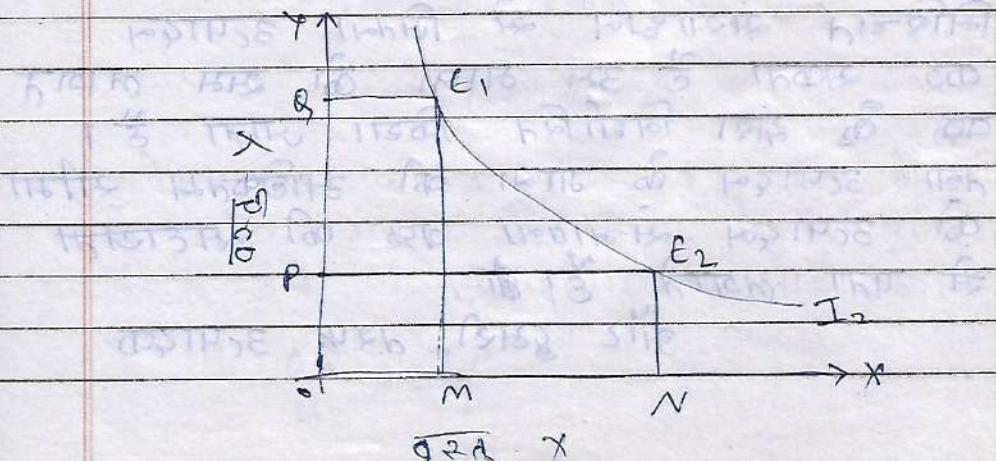
उत्पादन संभावनाक्रम
Production Possibility Curve

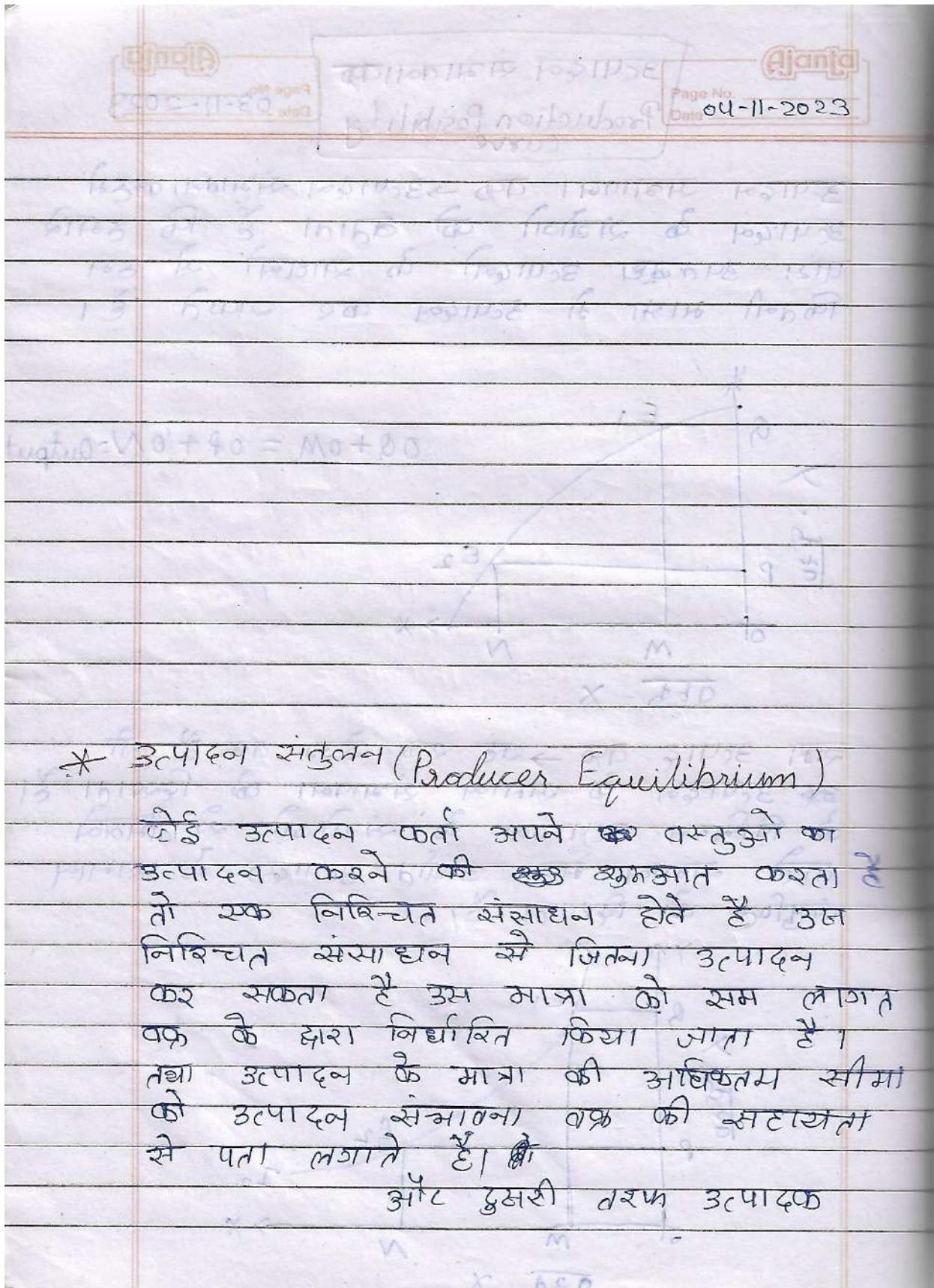
Page No. 03-11-2023
Date 03-11-2023

उत्पादन संभावना वक्र \rightarrow उत्पादन संभावना वक्र हमें उत्पादन के संयोजनों को बताता है कि हमारे पास उपलब्ध उत्पादनों के साथनों से हम कितनी मात्रा में उत्पादन कर सकते हैं।



सम उत्पादन वक्र \rightarrow यह एक लंबा वक्र है जो उत्पादन के सामान अंगावना को दिखाता है। ये विभिन्न उत्पादन के संयोजनों से मिलके ताके सामान मात्रा अर्थात् उत्पादक के सामान संतुष्टि के दिखाता है।





GST → Goods and Service Tax

Ajanta
Page No. 04-11-2023

लाभ को हेतुते कुछ समान मिलके वाले लाभ के संबोधी को देखते हुए संतुलन स्थापित करने का कोशिश की जाता है। इसी क्रम में उत्पादक का संतुलन अमलोगत रूप से और सम उत्पादक रूप के मिलके वाले किसी पर होती है यह कि-कु उत्पादक के संतुलन किसी कदमता हो जहाँ उत्पादन करने आपन संसाधनों का प्रयोग करके अधिकतम लाभ आर्जित करता है। जिसे बिन्दुत्तिरूपित चित्र के द्वारा प्रस्तुत किया जाया है।

Goods - X

आपेक्ष मांग की लोच → जब कीमत में परिवर्तन से अधिक मांग की मात्रा में परिवर्तन होता है तो उसे सापेक्ष मांग की लोच कहते हैं।
अर्थात् $\frac{\Delta Q}{Q} > \frac{\Delta P}{P}$

Page No. 06-11-2023

निवेद मांग की लोच \rightarrow जब मांग की लोच इक्षु से अधिक होती हो तो उसे निवेद मांग की लोच कहते हैं। अर्थात् $M > 1$

श्रम वाजाएँ
सीमान्त उत्पादकता

मजदूरी का सीमान्त उत्पादकता सीधांत दस वीधांत के अनुसार मजदूरों को मजदूरी और उसके बारे किये जाए कर्म के सीमान्त उत्पादकता के अनुसार मुक्ताव किया जाना चाहिए। गहरी धींहांत हमें यह बताता है कि कोई भी मजदूर जितनी उत्पादकता करता है उस उत्पादकता को मांगदीक मूल के बराबर उसके मजदूरी मिलती है।

सीमान्त उत्पादकता विकासने के लिए हम कुल उत्पादकता में से उसके पहले तोले कुल उत्पादकता को घटा देते हैं। अर्थात् $MP = TP_n - TP_{n-1}$

उपर्युक्त लिए दस मजदूर मिलके 2 कुल 200 जोड़ खुले बनाते का निर्माण करते हैं। उनमें से हमें यह आविष्कार मजदूर लगाके से कुल 230 जोड़ खुले बनते हैं तो 22 के मजदूर का सीमान्त उत्पादकता 30 जोड़ खुले का निर्माण है।

Page No. _____
Date _____

दुसरे बालों में, 11 मजदूर के फुल जुते का उत्पादन 230 जोड़े जुते हैं उनमें से 10 मजदूरों का उत्पादन 200 जोड़े जुते हैं। तो 11वें मजदूर का उत्पादन $\frac{230 - 200}{10} = 30$

चुप्त मांग (Drive Demand)

किसी पर्यावरण की मांग से अधिक दुखरे पर्यावरण की मांग होती है तो उसे चुप्त मांग कहते हैं।

Exa → सेवक की मांग → छात्र की मांग।
फैक्ट्री की मांग → पेट की मांग।

Q-1 स्थिरांतर की अपेक्षागता हाल के नियम

Q-2 सम स्थिरांतर अनुसूची नियम की व्याख्या करें।

Q-3 मांग के नियम की व्याख्या करें। मांग के प्रकारों की लिखें।

Q-4 मांग की लोच क्या है? और इसके मापने की विधि तथा तरिका की व्याख्या करें।

Q-5 अर्थव्यापार की परिभाषा क्या है? आप क्या समझते हैं?

Q-6 मूर्ति प्रतियोगिता के बाजार से आप क्या समझते हैं?

Q-7 इकाईकार बाजार क्या होता है? उदाहरण सहित व्याख्या करें।

Q-8 उपभोक्ता समझते हैं?

Q-9 तकनीकीय उपलब्धिता की विशेषताएँ क्या होती हैं?

